स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 3; Number :12
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

शिक्षा के क्षेत्र में ध्यान देना बहुत जरूरी है कि बालक की आदतें जटिल न बनें, वह विकारों में न फंसे। इसके लिये उसके संवेगों पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे अक्षर–बोध शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जैसे भाषा और तर्क का बोध शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है, वैसे ही जीवन के निर्माण का बोध भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है। जैसे गणित का ज्ञान शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है, वैसे ही जीवन–निर्माण का ज्ञान सिखाना भी शिक्षा का अनिवार्य अंग है। अक्षर–बोध, गणित का ज्ञान, भाषा और तर्क का बोध– ये आजीविका चलाने के साधन हैं। ये जीवन के साध्य नहीं हैं। कभी–कभी आदमी साधन को प्रथम मान लेता है और मूल को भुला बैठता है। आदमी का सारा ध्यान साधन पर अटका रहता है। साधन जिसके लिये है, वह उपेक्षित रह जाता है। सब्जेक्ट आंखों से ओझल हो जाता है और सारा ध्यान ऑब्जेक्ट पर अटका रह जाता है।

क्या आज शिक्षा के क्षेत्र में यह नहीं हो रहा है। हमारा ध्यान सब्जेक्ट पर भोक्ता पर नहीं है। सारा ध्यान भोग्य पर, ऑब्जेक्ट पर केन्द्रित है। यह एक दुर्व्यवस्था है। इसका प्रतिरोध या प्रतिकार होना चाहिए – **आचार्य महाप्रज्ञ**

सम्पूर्ण देश में मनाया गया जीवन विज्ञान दिवस

आचार्यश्री महाप्रज्ञ को प्रदत्त 'महाप्रज्ञ' अलंकरण के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को सम्पूर्ण देश में 'जीवन विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय, लाडनूँ के निर्देशन में सम्पूर्ण देश में जीवन विज्ञान दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस हेतु हाथीमल जसकरण बैंगानी जनसेवा कोष लाडनूँ/कोलकाता के आर्थिक सहयोग से छपे हुए पोस्टर एवं पेम्पलेट देशभर में चातुर्मास स्थल, सभाओं, युवक परिषदों एवं जीवन विज्ञान अकादमियों को प्रेषित किये गये, जिनका सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुआ। देश के अनेक स्थानों पर चारित्रात्माओं के सान्निध्य में जीवन विज्ञान दिवस धूमधाम से मनाने के समाचार प्राप्त हुए हैं। उनमें से कुछ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

इन्दौर – म.प्र.जीवन विज्ञान अकादमी द्वारा कोठारी कॉलेज ऑफ मैनेजमेन्ट साइंस एण्ड टेक्नोलोजी के सौजन्य से इस अवसर पर

आयोजित नशामुक्ति रैली को संबोधित करते हुए साध्वीश्री निर्मलयशाजी ने कहा कि आज सारे विश्व में जो अस्थिरता व अमानवीयता आई है, इसने हर व्यक्ति की मूल जड़ों को हिला कर रख दिया है। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने आत्मीय विकास के बारे में सजग हो जाये तो स्वस्थ समाज की संरचना मुश्किल नहीं होगी। आज की रैली मात्र एक औपचारिकता एवं संदेश तक सीमित होकर न रहे अपितु प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्रत्यक्ष रूप ले। कोठारी ग्रुप **क्रमशः पृ.2 पैरा1**

आओ हम जीना सीखें : गति

गति के लिये प्रेक्षाध्यान में 'गमनयोग' शब्द प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य है– मात्र गति पर ही ध्यान केन्द्रित रखना। चलते समय बात करना, चिन्तन करना आदि क्रियाएं सामान्यतः नहीं होनी चाहिए। ध्यान केवल चलने पर एकाग्र रहे।

गति का दूसरा अर्थ है – जीवन में विकास करना। यह भी एक प्रकार की गति है। भारतीय संस्कृति 'चरैवेति' को बहुत महत्व देती है। उसके अनुसार जो चलता है, उसका भाग्य भी उसके साथ चलता है और जो ठहरता है उसका भाग्य भी ठहर जाता है। यहां चलने का अर्थ है– अध्यात्म की दिशा में प्रस्थान करना। इस प्रस्थान के लिये जरूरी है जीवन को ज्ञान के प्रकाश और आचरण की सौरभ से भरा जाए। वस्तुतः जीवन को मंजिल की ओर गतिमान करने के लिए ज्ञान का प्रकाश और आचरण की सौरभ चाहिए। ज्ञान के आलोक में व्यक्ति अपना आत्म–निरीक्षण करता रहे और सदाचरण की सौरभ से जीवन को महकाता रहे। – **आचार्य महाश्रमण।**

A Mission is Achieved with Determination not Dreams
- Acharya Mahashraman

प्रेक्षाध्यान,जीवन विज्ञान चिन्तनगोष्ठी

कोबा – दिनांक 19.12.2012 बुधवार प्रेक्षाध्यान एवं रोटेरी क्लब कैपीटल, गॉधीनगर (बलराम मंदिर) के तत्वाधान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अरूण भाई जवेरी ने कम्प्यूटर के माध्यम से प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान की विस्तृत जानकारी दी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रतिपादित इस वैज्ञानिक ध्यान पद्धति के द्वारा स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवनशैली की उपयोगिता के बारे में बताया। प्रेक्षा विश्व भारती के प्रशासनिक अधिकारी अशोक जैन ने संस्था का परिचय दिया एवं परिसर में होने वाली गतिविधियो की जानकारी दी।

वरिष्ठ साधक भंवरलाल चौपड़ा ने अपने उद्बोधन में प्रेक्षाध्यान के अनुभव एवं प्रेक्षाध्यान के शिविर में होने वाले दैनिक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की व्यवस्था में रोटेरीयन गिरीश त्रिवेदी एवं प्रेक्षा विश्व भारती के मैनेजर श्री कन्हैयालाल शर्मा का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन प्रशासनिक अधिकारी अशोक जैन ने किया एवं रोटेरी क्लब के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षा विश्व भारती में 11 दिवसीय श्रीराम कथा

श्रीराम फाउण्डेशन द्वारा आयोजित 11 दिवसीय रामकथा के कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में शासन सेवी जयचन्दलाल संचेती ने संत श्री छोटे मुरारी बापू को आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य भेंट किया व प्रेक्षा विश्व भारती परिवार की तरफ से हार्दिक अभिनन्दन किया।

प्रशासनिक अधिकारी अशोक कुमार जैन ने इस अवसर पर प्रेक्षा विश्व भारती का परिचय देते हुए समस्त गतिविधियों की जानकारी दी एवं राम कथा के आयोजन पर आभार प्रदर्शित किया। 11 दिवसीय राम कथा आयोजन के लिए प्रेक्षा विश्व भारती के मैनेजर कन्हैयालाल शर्मा का परिसर व्यवस्था में विशेष सहयोग रहा।

जिज्ञासा : मुनि किशनलाल

जानने की तीव्र इच्छा व्यक्ति को ज्ञानी बनाती है। ज्ञान से व्यक्ति की चेतना का विकास होता है। वह अपनी मंजिल तक पहुंच जाता है। इच्छा और जिज्ञासा में थोड़ा अन्तर है। जहाँ जानने की तीव्र इच्छा होती है, वह जिज्ञासा है। जहां केवल इच्छा होती है उसे जिज्ञासा नहीं कहा जा सकता। जिज्ञासा में खोजी मनोवृत्ति होती है। व्यक्ति समस्या के समाधान हेतु मूल तक जाने की कोशिश करता है। डॉ. रमन्ना ने बचपन में इन्द्रधनुष को देखा और अपने दादा से जिज्ञासा की 'यह क्या है?' 'इसे किसने और क्यों बनाया है?' दादा का उत्तर था – यह वर्षा के दिनों में प्रकट होता है। प्रकृति की लीला है। जब–जब इन्द्र धनुष दिखाई देता, बालक रमन्ना के दिल और दिमाग में यह बात घूमती रहती। बड़े होकर उन्होंने रंगों की रचना के संबंध में खोज की। उनको नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आचार्य महाप्रज्ञ भी जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। उनके मन और मस्तिष्क में ध्यान की जिज्ञासा थी। उन्होंने प्रेक्षाध्यान का आविष्कार किया। शिक्षा जगत् को जीवन विज्ञान के रूप में भावनात्मक विकास की दृष्टि प्रदान की।

जिसमें जिज्ञासा होती है, वह कुछ न कुछ नया खोज ही लेता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने मिसाइल–मेन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शान्ति की मिसाइल बनाने की प्रेरणा दी।

प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही जिज्ञासु होता है। वह जानना चाहता है और उसके लिये प्रयोग करता है। शिशु किसी वस्तु के बारे में जानने हेतु अपनी प्रयोगशाला मुंह का उपयोग करता है। वह प्रत्येक वस्तु को अपने मुख में लेकर जांच करता है। परन्तु जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है, उसकी जिज्ञासा वृत्ति कमजोर होने लगती है। कुछ ही व्यक्तियों में प्रबल जिज्ञासावृत्ति की विशेषता पाई जाती है। वे समाज और राष्ट्र को कुछ नया दे जाते हैं। इसलिए उनको श्रद्धा से याद किया जाता है। जिज्ञासा को जगाने का एक छोटा सा सूत्र है 'संकल्प'। जिज्ञासा जगा कर महान् कार्य को अन्जाम दिया जा सकता है।

क्रमशः पृ.1 पैरा 1 के फाउण्डर गौतम कोठारी ने कहा कि अवचेतन मन को चेतन मन में परिवर्तित कर इस भौतिकवादी जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये जीवन विज्ञान के प्रयोगों का नियमित अभ्यास विद्यार्थी को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में अमृत तुल्य सहयोग प्रदान करता है। प्रशिक्षक आत्माराम तिवारी के नेतृत्व में योगासनों की प्रस्तुति भी हुई। कोठारी ग्रुप के चेयरमेन सुरेश कोठारी ने भी रैली को संबोधित किया।

गोगुन्दा – सुख बाल मंदिर उ.प्रा.वि.गोगुन्दा के तत्वावधान में जीवन विज्ञान रैली का आयोजन हुआ। यहां विराजित शासनश्री मुनि श्री रविन्द्रकुमारजी ने चारित्रिक विकास में जीवन विज्ञान की भूमिका को प्रतिपादित करते हुए क्रोध–शमन एवं वाणी संयम के उपाय सुझाए। इस अवसर पर चित्रकला एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। मुनिश्री दिनकर जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

हैदराबाद – जीवन विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने कहा कि जीओ तो प्रकाश बनकर जीओ। जीवन विज्ञान केवल सिद्धान्त ही नहीं प्रायोगिक प्रक्रिया भी है। उन्होंने अध्यापिकाओं को जीवन विज्ञान में उच्च शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री मंजूरेखाजी ने कहा कि शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं भावात्मक रूप से स्वस्थ रहते हुए सम्पूर्ण जीवन जीने का नाम है जीवन विज्ञान। जीवन विज्ञान हमें स्वयं पर विश्वास करना सिखाता है। साध्वीश्री उदितप्रभाजी, निर्भयप्रभाजी एवं चेलनाश्रीजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

धुरी – महाप्रज्ञ अलंकरण–जीवन विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए **क्रमशः पैरा 2** .....

क्रमशः पैरा 1 .....मुनिश्री अर्हतकुमार ने कहा कि विद्यालय सरस्वती का पावन मंदिर है जहां शिक्षा के माध्यम से देश की भावीपीढ़ी का विकास होता है। शिक्षा का सूत्र है पहले ग्रहण करो, फिर आचरण में लाओ। वर्तमान में व्यक्ति ग्रहण तो करता है परन्तु आसेवन की बात छूट गई है, परिणामतः बौद्धिक विकास तो हो रहा है परन्तु भावात्मक एवं चारित्रिक विकास नहीं हो रहा है। मुनिश्री भरतकुमार ने कहा कि आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि सभी का समाधान युगपुरुष आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के माध्यम से किया है। जीवन विज्ञान से विद्यार्थी का जीवन पावन, उन्नत और महान् बनता है।

वाव – जीवन विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदूषी शिष्या साध्वीश्री काव्यलताजी ने कहा कि सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य को केन्द्र में रखकर जीवन विज्ञान व्यक्ति–व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाता है। भावी पीढ़ी को संस्कारित करने एवं जन–जन की जीवनधारा को बदलने के लिये यह अभियान बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वीश्री ज्योतियशाजी ने अपने विचार रखे। साध्वीश्री सुरभिप्रभा व साध्वीश्री वैभवयशा ने गीतिका का संगान किया।

चुरू – जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन साध्वीश्री ललितप्रभाजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रैली का आयोजन किया जो कमलकुंज से रवाना होकर विद्यालय पहुंची। कार्यक्रम का संयोजन मनोज शर्मा ने किया। इस अवसर पर डॉ. ज्ञानप्रकाश गुप्ता, छतरसिंह डागा एवं राजेश बांठिया सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

जयपुर – जीवन विज्ञान का ध्येय है – स्वस्थ समाज की संरचना व आदतों का परिष्कार। नैतिक मूल्यों का विकास एवं भावात्मक विकास जीवन विज्ञान की शिक्षा से ही संभव है। अतः विद्यार्थी जीवन में इसे अपनाएं और अपने जीवन को मधुर बनाएं। उक्त विचार साध्वीश्री संयमश्री की सहवर्ती साध्वीश्री सहजप्रभा ने व्यक्त किये। जीवन विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए उन्होंने आगे कहा कि जीवन विज्ञान जीवन जीने की कला सिखाता है। आज विद्यार्थी का शारीरिक व बौद्धिक विकास तो हो रहा है, लेकिन मानसिक एवं भावात्मक विकास हेतु वर्तमान शिक्षा पद्धति में ध्यान नहीं दिये जाने के कारण व्यक्तित्व का असंतुलित विकास हो रहा है। साध्वीश्री मौलिकप्रभा ने जीवन विज्ञान गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। हिम्मतसिंह डोसी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कालांवाली – 'आज के दिन आचार्य तुलसी द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ को 'महाप्रज्ञ अलंकरण' प्रदान किया गया था। देश, धर्म का भावी भविष्य उज्ज्वल बने और धर्मसंघ नई ऊंचाइयों को छुए, इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान का अवदान दिया। मैं शिक्षकों को कहना चाहूंगी कि वे जीवन विज्ञान के प्रयोगों को अपने बच्चों के जीवन में उतारें। उक्त विचार साध्वीश्री जिनबाला ने जीवन विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विशाल शिक्षक सम्मेलन में व्यक्त किये। साध्वीश्री करुणाप्रभा ने 'प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान' का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। मंच संचालन दिनेश गर्ग ने किया।

आसीन्द – अमृत भारती मा.वि. में जी.वि. दिवस का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सरोजकुमारी ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए नम्रता एवं सहनशीलता जैसे गुणों से जीवन को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा दी। साध्वी सोमप्रभा व प्रभावनाश्री ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं द्वारा रैली निकाली गई एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ। **इस प्रकार देश के अनेक स्थानों से जीवन विज्ञान दिवस मनाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।**